विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 24 : अंक 11 : नई दिल्ली : 8-14 जून 2018

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण अहिंसा यात्रा का कुशल नेतृत्व करते हुए आंध्रप्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में सानंद विहरण कर रहे हैं। सात जून को मानसून की प्रथम बारिश हो चुकी है। लोगों का मानना है कि अब प्रखर आतप और अत्यधिक उमस की स्थिति से संभवतः निजात मिल जाएगी। पूज्यप्रवर ने आंध्रप्रदेश में स्पर्शनीय प्रायः सभी तेरापंथी क्षेत्रों का स्पर्श कर लिया है। जुलाई के प्रथम सप्ताह में तमिलनाडु की धरती पूज्यचरणों से पावन बनेगी, ऐसा पूर्व निर्धारित है। पूज्यप्रवर जुलाई के द्वितीय और तृतीय सप्ताह में चेन्नई की उपनगरीय यात्रा करेंगे। इस दौरान १८ जुलाई को दीक्षा समारोह भी समायोजित होगा। आचार्यप्रवर २१ जुलाई को चेन्नई के 'माधावरम्' में भव्य पावन चातुर्मासिक प्रवेश करेंगे। वह क्षण भी क्रमशः निकट बनता जा रहा है, जब पूज्यप्रवर २७ जुलाई को रात्रि ८ से ९ बजे के बीच सन् २०२१ के चतुर्मास की घोषणा करेंगे। इस संदर्भ में विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिनिधि मंडल अपनी-अपनी प्रार्थना के साथ पूज्यचरणों में पहुंच चुके हैं। चतुर्विध धर्मसंघ की निगाहें उत्सुकता के साथ उस क्षण पर टिकी हुई है।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण आन्ध्रप्रदेश में

दिन-रात्रि में रहा प्रखर आतप और तीव्र उमस का साम्राज्य

३० मई। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने द्विदिवसीय प्रवास के उपरान्त विजयवाड़ा से प्रस्थान किया। आज से राष्ट्रीय राजमार्ग 'एक्सप्रेस हाइवे' अर्थात् 'सिक्स लेन' हाइवे के रूप में हो गया। बताया गया कि काफी दूर तक यह राजमार्ग इसी रूप में बना हुआ है। कृष्णा नदी पर बने करीब तीन कि.मी. लम्बे पुल पर चलकर पूज्यप्रवर इस पार पधारे। इसी नदी के नाम पर ही जिले का नाम कृष्णा रखा गया है। नदी वर्तमान में प्रायः पूरी तरह सूखी हुई थी। इसका कारण था कुछ ही दूरी पहले बना हुआ बांध। उस बांध में नदी के पानी को रोककर रखा गया है। जब वर्षाकाल में पानी का वेग ज्यादा हो जाता है, तब बांध के ७४ द्वारों में से कुछ द्वार खोल दिए जाते हैं। कृष्णा नदी का पानी करीब ५६ कि.मी. आगे स्थित समुद्र में मिल जाता है। जहां नदी और सागर का मिलन होता है, उसके आसपास 'मछलीपत्तनम्' पोर्ट भी बना हुआ है, ऐसा बताया गया। सूखी नदी में से मकानों आदि के निर्माण के लिए मिट्टी निकाली जा रही थी। बताया गया कि तमिलनाडु में इस प्रकार नदी की मिट्टी को निकालना वर्जित है, इसलिए आंध्रप्रदेश से मिट्टी से भरे बड़े-बड़े वाहन वहां पहुंचाए जाते हैं। स्वाभाविक रूप से इस मिट्टी की कीमत वहां बढ़ जाती है।

इन्द्रकलाद्रि पहाड़ पर बना हुआ कनकदुर्गा देवी का मंदिर विजयवाड़ा का प्रसिद्ध मंदिर है। इसे 'विजया' मंदिर भी कहा जाता है और इसी के आधार पर शहर का नाम 'विजयवाड़ा' रखा गया है। कृष्णा नदी के इस पार आते ही कृष्णा जिले की सीमा समाप्त हो गई और 'गुन्टूर' जिला प्रारम्भ हो गया।

आज धूप और उमस दोनों प्रखर रूप धारण किए हुए थीं। तीखी धूप मानों शरीर को झुलसा रही थी तो तीव्र उमस शरीर को पसीने से नहलाकर 'आग में घी' का-सा कार्य कर रही थी। आज न तो बादल थे और न ही वृक्षों की छाया। इस कारण धूप और उमस स्वच्छंदतापूर्वक अपना साम्राज्य स्थापित किए हुए थीं।

पूज्यप्रवर मौसम की इस प्रतिकूल परिस्थिति में भी समभाव से निरंतर गन्तव्य की ओर गतिमान थे।

'आत्मटुर' नामक गांव के ग्रामीण पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। मार्ग में आंध्रप्रदेश की राजधानी के रूप में निर्मीयमाण 'अमरावती' शहर का भी कुछ हिस्सा पूज्यचरणों से पावनता को प्राप्त हुआ।

आंध्रप्रदेश पुलिस हेडक्वार्टर के रूप में नव निर्मित विशाल इमारतें तथा आसपास में निर्मीयमाण विशाल इमारतें अमरावती के भावी भव्य रूप को अनुमानित करवा रही थीं। पूज्यप्रवर करीब १२.५ कि.मी. का विहार कर मंगलागिरि में स्थित बापूजी विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--अवमोदरिका तीन प्रकार की होती है--१. उपकरण अवमोदरिका २. भक्तपान अवमोदरिका ३. भाव अवमोदरिका। अवमोदरिका का तात्पर्य है अल्पीकरण। वस्त्र आदि उपकरणों का अल्पीकरण करना, उपकरण अवमोदरिका है। गृहस्थ को परिग्रह के अल्पीकरण का प्रयास करना चाहिए। जहां परिग्रह होता है, वहां मोह-आसक्ति भी हो सकती है। मोह-आसक्ति आत्मा को अवनति की ओर ले जाती है।

खाने-पीने की सीमा करना भक्तपान अवमोदरिका है। भूख होने पर भी वैराग्य पूर्वक साधना की दृष्टि से कुछ कम खाना भी भक्तपान अवमोदरिका है। खाना खाने के बाद भी तीन-चार घंटे तक तिविहार त्याग किया जा सकता है। नवकारसी, प्रहर, रात्रिभोजन परित्याग आदि विभिन्न रूपों में खाद्य संयम किया जा सकता है।

भाव अवमोदरिका में कषायों का अल्पीकरण किया जाता है। आदमी को ज्यादा गुस्से, झगड़े में नहीं जाना चाहिए। कटु वचन के प्रयोग से बचना चाहिए। झगड़ा करने वाला बड़ा नहीं होता, क्षमा करने वाला बड़ा होता है। आदमी को अभिमान में नहीं जाना चाहिए। ज्ञान के साथ अहंकार नहीं बढ़ना चाहिए। अहंकार आत्मोत्थान का बाधक तत्त्व है।

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'आदमी को अपने गुरु के सामने अहंकार के वशीभूत होकर शेर बनने का प्रयास नहीं करना चाहिए। गुरु के सामने तो विनम्र रहने का प्रयास करना चाहिए। गुरु के सामने सियार बनकर रहने वाला औरों के सामने शेर की तरह दहाड़ सकता है तथा गुरु के सामने शेर बनने का प्रयास करने वाले शिष्य को औरों के सामने सियार बनकर रहना पड़ सकता है।'

परम पूज्य आचार्यप्रवर सहित साधु-साध्वियों के आज के प्रवास स्थल की छत टीन से निर्मित थी। कुछ कमरों में उसके नीचे एक और छत के रूप में 'प्लास्टर ऑफ पेरिस' लगा हुआ था तो कुछ कमरों में सीधा टीन ही था। आज गर्मी भी कुछ ज्यादा ही प्रखरता धारण किए हुए थी। आतप और उमस का योग सबको पसीने से नहला रहा था। वस्त्रों को निचोड़कर सुखाने के बाद पुनः जब भी धारण किया जा रहा था, वे कुछ ही क्षणों में पुनः निचोड़ने योग्य बन रहे थे। इस भीषण गर्मी में पानी पीने के कुछ ही क्षणों में प्यास की अनुभूति हो रही थी। सायंकाल मौसम ने कुछ करवट ली, मन्द-मन्द हवा बहने लगी। गर्मी से आहत लोग कुछ राहत का अनुभव करने लगे, किन्तु कुछ ही देर में हवा ने पुनः विश्राम ले लिया। फलस्वरूप उमस फिर से वातावरण में व्याप्त हो गई। पुनः पसीना शरीर को आर्द्र बनाने लगा। आचार्यप्रवर और संतों का रात्रिप्रवास प्रायः इसी स्थिति में हुआ।

रात्रि में अर्हत वन्दना से पहले इंटलीजेंस ब्यूरो (अमरावती हेडक्वार्टर) के डी.एस.पी. श्री मोहन राव ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। आचार्यप्रवर ने उन्हें अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति प्रदान की। श्री मोहन राव बोले--'स्वामीजी! शंकराचार्य ने कहा है कि सत्संगति करनी चाहिए। आज मैं सत्संगति के लिए यहां आया हूं और आपके रूप में सचमुच भगवान के दर्शन कर धन्य हो गया।'

लाभप्रद होती है पर्युपासना

३१ मई। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः मंगलागिरि से नंबूर की ओर प्रस्थान किया। मंगलागिरि के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर को वंदन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। सूर्य की प्रखरता गत कल से भले थोड़ी कम हो, किन्तु उसकी तीखी किरणें आज भी मानों शरीर को बींध रही थी। उमस भी चिलचिलाती धूप की सहचारी बनी हुई थी। इस कारण शरीर स्वेद से स्नात बन रहा था। पूज्यप्रवर मौसम की प्रतिकूलता की परवाह किए बिना निरंतर अपने गंतव्य की ओर गति करते हुए लगभग ८.८ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर नंबूर में स्थित ह्रींकार तीर्थ में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ। ह्रींकार तीर्थ से संबंधित लोगों ने आचार्यप्रवर का आस्थासिक्त स्वागत किया।

मूर्तिपूजक संप्रदाय के मोहनमुनि समुदाय की साध्वी प्राविण्य निधिजी ने और संयम निधिजी ने पूज्यप्रवर की अगवानी की।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'साधु की पर्युपासना के दस लाभ बताए गए हैं। उनमें पहला है--श्रवण। साधु के पास बैठने से कुछ सुनने का मौका मिल सकता है। व्याख्यान में आगमवाणी सुनने का अवसर मिल सकता है। व्याख्यान के बिना भी साधु के पास बैठने से तत्त्व आदि ज्ञान की बातें सुनने को मिल सकती हैं। अच्छी बात को सुनना भी अच्छा होता है। त्यागी और ज्ञानी साधु के प्रवचन अथवा उपदेश को सुनना भी अच्छा है। ज्ञानी संत की बात ध्यान से सुनी जाए तो वह बात कल्याणकारी दिशा में आगे बढ़ाने वाली बन सकती है। सुनने से ज्ञान, ज्ञान से विज्ञान अर्थात् हेय और उपादेय का विवेक, विवेक से प्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान से संयम, संयम से अनाश्रव, अनाश्रव से तपस्या, तपस्या से निर्जरा, निर्जरा से अयोग और अयोग से मोक्ष प्राप्त हो सकता है। इस प्रकार सत्संगति से क्रमशः दस लाभ प्राप्त हो सकते हैं।

बाहर से जागना एक बात है, मोह-निद्रा में सोए लोगों को भी संत अपने उपदेश के द्वारा जगा सकते हैं। आदमी सत्संगति के द्वारा श्रवण से सिद्धि तक की यात्रा कर सकता है।'

कार्यक्रम में उपस्थित मूर्तिपूजक आम्नाय की साध्वियों के संदर्भ में कहा--'दूर की यात्रा में कभी-कभी जैन शासन के साधु-साध्वियों से मिलना होता है। पहले विजयवाड़ा में मुनि संयमरत्नविजयजी मिले थे और आज साध्वियों से मिलना हुआ है। साध्वियां खूब अच्छी साधना करें और जैन शासन की पवित्र सेवा करती रहें।'

मूर्तिपूजक आम्नाय के मोहनमुनि समुदाय की साध्वी प्राविण्यनिधिजी ने कहा--'तीर्थंकर सम आचार्यश्री भगंवत का जब इस ह्रींकार तीर्थ में आगमन और आपके इस तेजोमय आभामंडल के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त कर मन आनंदित और हर्षविभोर हो उठा है। जिनशासन के ऐसे महान संत का आज सहज ही सान्निध्य प्राप्त कर हम अभिभूत हैं।' साध्वीजी ने आचार्यप्रवर की अभिवंदना में एक गीत का संगान भी किया।

ह्रींकार तीर्थ के मंत्री श्री सांकलचंद बागरेचा और श्री घीसूलाल अब्बानी ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

सायंकाल करीब पांच बजे आचार्यप्रवर नंबूर से पेडा का कानी की ओर प्रस्थित हुए। तब तक मौसम बदल चुका था। आसमान में छाए हुए बादलों ने सूर्य को अपनी ओट में ले लिया था। मंद-मंद बयार बहने लगी। सूर्य की अनुपस्थिति में हवा ने भी शीतलता धारण कर ली। गर्मी से आहत लोग राहत का अनुभव करने लगे। हालांकि प्रायः दिन भर प्रखर आतप में तपी हुई सड़क में कुछ गर्माहट थी, किन्तु खुशनुमा मौसम के सामने उसकी तपिश नगण्य थी। करीब ६.७ कि.मी. का विहार कर पूज्यप्रवर पेडा का कानी में पधारे। सेंट जोसेफ हाइस्कूल में परमाराध्य आचार्यप्रवर का आज का रात्रिकालीन प्रवास हुआ।

रात्रि में कॉमर्शियल टेक्स डिपार्टमेंट के असिस्टेंट कमिश्नर श्री एम.वी. मुत्याला राव तथा असिस्टेंट कमिश्नर श्री के. सत्यनारायण ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पूज्यप्रवर से पावन पथदर्शन प्राप्त किया।

जिनशासन के देदीप्यमान सूर्य के स्वागत में उमड़ा गुन्टूर जैन समाज

१ जून। परमाराध्य आचार्यप्रवर सूर्योदय के करीब पौन घंटे बाद पेडा का कानी से गुन्टूर की ओर प्रस्थित हुए। आसमान में छाए हुए बादलों के कारण सूर्य अदृश्य बना हुआ था, किन्तु उसकी अनुपस्थिति में भी उमस उसका दायित्व बखूबी निभाते हुए शरीर को पसीने से तरबतर बना रही थी। गुंटूर जिले की पुलिस आंध्रप्रदेश के राजकीय अतिथि आचार्यप्रवर की सेवा में तल्लीनता के साथ जुटी हुई थी।

तेरापंथ की आचार्य परंपरा में आचार्यप्रवर का प्रथम बार पदार्पण स्थानीय तेरापंथ समाज के लोगों को अतिशय आह्लादित बनाए हुए था। उनकी प्रसन्न मुखाकृति उनके आन्तरिक उल्लास को बयां कर रही थी। मात्र १६ तेरापंथी परिवारों के प्रवास क्षेत्र गुन्टूर में पूज्यप्रवर के स्वागत में सैंकड़ों लोगों का उमड़ना स्पष्ट दर्शा रहा था कि अन्य जैन एवं जैनेतर समाज भी आचार्यप्रवर के पदार्पण से हर्षविभोर बने हुए हैं। गुन्टूरवासियों ने आचार्यप्रवर के स्वागत में पलक पांवड़े बिछा दिए। लोग दूर-दूर तक आचार्यप्रवर की अगवानी में पहुंच रहे थे और पूज्यप्रवर को वंदन कर पावन आशीष प्राप्त कर रहे थे। जिनशासन के देदीप्यमान सूर्य के स्वागत में स्थानीय जैन समाज के विभिन्न संगठन सोल्लास उपस्थित थे।

स्थान-स्थान पर खड़े जैनेतर लोग भी पूज्यचरणों में प्रणति अर्पित कर रहे थे तो आचार्यप्रवर उन पर आशीर्वाद की वर्षा कर रहे थे। कुछ लोगों ने अपनी-अपनी दुकान आदि के बाहर पूज्यप्रवर के दर्शन कर श्रीमुख से मंगलपाठ श्रवण का सौभाग्य प्राप्त किया। कुछ अन्य जैन एवं जैनेतर लोग भी अपनी-अपनी ओर से जुलूस में संभागी लोगों के लिए पेय आदि की व्यवस्था भी किए हुए थे। भव्य स्वागत जुलूस में स्थानीय जैन समाज के विभिन्न संगठन--राजेन्द्र जैन युवक मंडल, राजेन्द्र जैन महिला मंडल, महावीर सामायिक मंडल, महावीर मंडल, विहार युवक मंडल आदि तथा पुरोहित समाज के लोग उत्साह के साथ संभागी बने हुए थे। चंदना ब्रदर्स से प्रारम्भ हुए भव्य स्वागत जुलूस के साथ पूज्यप्रवर लालपेठा पुलिस स्टेशन, मेन बाजार, आर. अगराहरम होते हुए नल्लारवेरु स्थित श्री महावीर मेमोरियल एजुकेशन इंस्टिट्यूशन में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। संस्थान से संबंधित प्रमुख कार्यकर्ताओं ने आचार्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। आज का विहार करीब ८.५ कि.मी. का रहा।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'आदमी को पूर्वकृत कर्मों का फल भोगना होता है। आस्तिक विचारधारा पूर्वजन्म, आत्मा, कर्मफल आदि को मानती है, जबकि नास्तिक विचारधारा इन्हें नकारती है, किन्तु परलोक के विषय में संदेह होने पर भी आदमी को अशुभ प्रवृत्ति का अर्थात् पाप का त्याग करना चाहिए और शुभ प्रवृत्ति में रत रहना चाहिए। क्योंकि परलोक के विषय में संदेह हो सकता है, किन्तु वर्तमान जीवन तो प्रत्यक्ष है। वर्तमान जीवन को भी अच्छा और शांतिपूर्ण बनाने के लिए आदमी को पाप का परित्याग करना चाहिए, हिंसा, झूठ आदि से बचते हुए जीवन में सदाचार को आत्मसात् करने का प्रयत्न करना चाहिए। यदि परलोक है तो आगे का जीवन भी अच्छा हो सकेगा।

आस्तिक हो या नास्तिक, सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति सबके लिए सुखदायी है, शांतिदायी है। कोई किसी धर्म को माने या न माने, जीवन को सुखमय और शांतिमय बनाने के लिए इन तीनों को आत्मसात् करना चाहिए।'

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'हर प्राणी जीवन जीता है, किन्तु मनुष्य जीवन बहुत महत्त्वपूर्ण है। एकमात्र मानव ही केवलज्ञान को प्राप्त कर सकता है। चौरासी लाख जीव योनियों में इस मानव जीवन को

दुर्लभ बताया गया है। आदमी इस जीवन की दुर्लभता का अंकन करे और अपने जीवन में साधना का विकास करे, यह काम्य है।

हमें जैन शासन प्राप्त है। यह हमारा सौभाग्य है कि हमें ऐसा शासन प्राप्त है, जिसमें अहिंसा, समता, संयम और तप का संदेश प्राप्त होता है। हम इस शासन में साधना करते हुए वीतरागता के विकास का प्रयास करें।'

पूज्यप्रवर ने सैंकड़ों की संख्या में उपस्थित गुन्टूरवासियों को अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति प्रदान करते हुए संकल्पत्रयी ग्रहण करने का आह्वान किया तो वे लोग अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर कृतसंकल्प बने।

महावीर कॉलेज के मंत्री श्री ललित सालेचा ने पूज्यप्रवर के स्वागत में कहा--'हमारे गुन्टूर नगर का अहोभाग्य है जो दक्षिण की धरा को पहली बार पावन करते हुए ऐसे सरलमना आचार्यश्री महाश्रमणजी के चरण आज हमारे नगर में पड़े हैं। आपके आगमन से चारों ओर हर्षोल्लास और आनंद का वातावरण छाया हुआ है। आपके आगमन की सूचना से ही पूरे गुन्टूर में उत्साह का संचार हो गया था। जब यहां के तेरापंथ समाज के कार्यकर्ताओं ने हमसे कहा कि हम आचार्यश्री का प्रवास महावीर कॉलेज में कराना चाहते हैं तो हमें अत्यंत प्रसन्नता हुई। हम लोगों ने उनसे कहा--'आप इसके द्वारा तो हम पर बहुत बड़ा उपकार कर रहे हैं। आपकी चरणरज प्राप्त कर यह कॉलेज और अधिक उन्नति करेगा, ऐसा मेरा विश्वास है। आचार्यश्री! आप अपनी कृपा हम सभी पर ऐसे ही बनाए रखें, यही आपसे प्रार्थना करता हूं।'

स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल की सदस्याओं ने स्वागत गीत का संगान किया। गुन्टूर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री घीसूलाल अब्बानी, मंत्री श्री तिलोकचंद छाजेड़, श्रीमती अंजू संकलेचा और श्री कन्हैयालाल मालू ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। गुन्टूर ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति के द्वारा पूज्यचरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए।

वाई.एस.आर. कांग्रेस के नेता श्री खिलारी वेंकट राशेय्या ने कहा--'मैं ऐसे महान आचार्य के प्रति नतमस्तक हूं, जो पदयात्रा के माध्यम से नैतिकता और व्यसनमुक्ति का अभियान चला रहे हैं। आपका आशीर्वाद गुंटूरवासियों को निरंतर मिलता रहे, यही प्रार्थना करता हूं।'

वाई.एस.आर. कांग्रेस के युवा नेता श्री लवु श्रीकृष्णदेव राय ने कहा--'महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी के नेतृत्व में गुंटूर आई अहिंसा यात्रा का मैं गुंटूरवासियों की ओर से हार्दिक स्वागत-अभिनन्दन करता हूं। हम गुंटूरवासी आपका प्रवास प्राप्त कर धन्य हो गए हैं। आपका यह मिशन निरंतर चलता रहे, ऐसी कामना करता हूं।'

कार्यक्रम में करीब ११.११ बजे से आचार्यप्रवर ने गुन्टूरवासियों को सम्यक्त्व दीक्षा प्रदान की।

आज गुन्टूर जिले के एस.पी. श्री सीएच वेंकट अप्पला नायडू ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल मार्गदर्शन प्राप्त किया।

जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि है संन्यास की प्राप्ति

२ जून। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः गुंटूर से चौडावरम् की ओर प्रस्थान किया। गत दो दिनों से पूज्यप्रवर के पांव में दर्द और हल्का सूजन है। चलने में कुछ कठिनाई भी हो रही है। मुनिवृंद ने साधन (हस्ताचलित व्हीलचेयरनुमा वाहन) के उपयोग हेतु प्रार्थना की, किन्तु आचार्यप्रवर मंद मुस्कान के साथ संतों की प्रार्थना को टालते गए और पूरा विहार पैदल ही किया। गत रात्रि से आसमान में बादल सूर्य को अदृश्य बनाए हुए थे। मंद-मंद शीतल हवा बह रही थी। इस प्रकार मौसम सुहावना रूप धारण किए हुए था। गत दो दिनों में विहार के दौरान शरीर से रिसने वाला पसीना आज नदारद था।

बताया गया कि गुंटूर और उसके आसपास मिर्ची और तम्बाकू की बड़ी मण्डी है। मार्ग में जहां-जहां मिर्ची और तम्बाकू बिक्री के लिए तैयार किया जा रहा था, राहगीर खांसने के लिए मजबूर हो रहे थे।

मार्ग में बेंगलुरु से समागत लोगों के साथ भारतीय सेना के मेजर जनरल श्री नरपत सिंह राजपुरोहित ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। वे बोले--'गुरुदेव! मैं आपके बेंगलुरु पदार्पण के संदर्भ में आपकी अगवानी करने आया हूं तथा मुझे अब पश्चिमी सीमा पर जाने का निर्देश मिला है तो उसके लिए मैं आशीर्वाद लेने भी आया हूं।' श्री नरपत सिंहजी काफी दूर तक पूज्यप्रवर के आसपास पैदल भी चले।

लगभग १३.० कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर चौडावरम् में स्थित कलाम हरनधा रेड्डी इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'संन्यास की प्राप्ति जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि होती है। संसारी लोग भोग की ओर आगे बढ़ते हैं। संसारी व्यक्ति राग प्रधान और संन्यासी त्याग प्रधान जीवन जीता है। कोई-कोई संसारी व्यक्ति में संन्यासी बनने की भावना जागती है, इसके पीछे पूर्व जन्मों के संस्कारों का भी योग हो सकता है। साधु जीवन स्वीकार करने का उद्देश्य होना चाहिए मोक्ष की प्राप्ति। मोक्ष एक सुन्दर विषय है, जो भारतीय साहित्य में प्राप्त होता है। समस्त कर्मों का नाश होने पर आत्मा का अपने स्वरूप में स्थित होना मोक्ष है। मोक्ष का स्थान एकान्त सुख वाला होता है। वहां किसी प्रकार का दुःख नहीं होता।

मोक्ष को प्राप्त करने के लिए सर्वज्ञता प्राप्त करना अपेक्षित होता है। सर्वज्ञ व्यक्ति उसी जन्म के बाद मोक्ष को प्राप्त होता है। अज्ञान और मोह को दूर कर सर्वज्ञता को प्राप्त किया जाता है। सर्वज्ञ बनने के लिए वीतराग बनना आवश्यक होता है। राग और द्वेष का क्षय कर आदमी वीतराग बन सकता है। राग और द्वेष ये दो तत्त्व वीतरागता के बाधक हैं। इन्हें दूर कर मोहमुक्त बना जा सकता है। आदमी साधना की दृष्टि से राग-द्वेष को प्रतनु बनाने का प्रयास करे, यह काम्य है।

मोक्ष का सुख शाश्वत होता है। वह एक बार प्राप्त हो जाता है तो वापिस कभी जाता नहीं है। साधु बनने का मूल लक्ष्य यही होता है कि मैं मोक्ष को प्राप्त करूं। जो लोग साधु न बन पाएं, वे लोग अणुव्रतों को स्वीकार करने का प्रयास करें, यह काम्य है। छोटे-छोटे संकल्पों से व्यक्ति की चेतना निर्मलता को प्राप्त हो सकती है।'

भारतीय सेना के मेजर जनरल श्री नरपत सिंह राजपुरोहित ने कहा--'सर्वप्रथम मैं विश्व के महान संत आचार्यश्री महाश्रमणजी के चरणों में प्रणाम करता हूं। मैं शुक्रगुजार हूं बेंगलुरुवासियों का जिनके सहयोग से मुझे ऐसे महापुरुष के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आज आपके साथ पदयात्रा में शामिल होने का जो सौभाग्य प्राप्त हुआ, वह मेरे लिए अविस्मरणीय बन गया। आपकी यह यात्रा सभी का कल्याण करने वाली है। गत दो सालों में बेंगलुरु के प्रशिक्षण केन्द्र में सेवा दे रहा था, अब मुझे पश्चिमी सीमा पर जाने का आदेश प्राप्त हुआ है।मैं आपसे ऐसे आशीर्वाद की कामना करता हूं कि मैं अपने दायित्वों का पूर्ण सजगता से पालन कर सकूं और अपने देश की परम सेवा कर सकूं। आप अपने बेंगलुरु प्रवास के दौरान सेना के प्रशिक्षण केन्द्र में भी पधारकर सेना को आध्यात्मिक शक्ति प्रदान करें, यह मेरा नम्र और आग्रह भरा निवेदन है। हमें देश की सुरक्षा का जज्बा आप जैसे महान संतों के आशीर्वाद और धर्म से प्राप्त होता है। यदि हमारा सैनिक अपने धर्म का पालन न करे अथवा अपने भगवान और अपने गुरु को न याद करे तो उसके लिए सीमा की सुरक्षा करना मुश्किल होता है। आपसे मिलने वाली ऊर्जा ही हम सैनिकों को सीमा पर अडिग बनाए रखती है।'

राजस्थान पत्रिका के अंतर्गत बेंगलुरु के प्रभारी संपादक श्री राजेन्द्रशेखर व्यास ने कहा--'मेरा यह परम सौभाग्य है कि मुझे आज आचार्यश्री महाश्रमणजी के दर्शन करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। पत्रकारिता

से जुड़े होने के कारण मैं आचार्यश्री के बेंगलुरु चतुर्मास में आचार्यश्री के उपदेशों की खुशबू फैलाने का पूरा प्रयास करूंगा। आपश्री के चेन्नई चतुर्मास के दौरान भी मैं अपने मित्र के माध्यम से भी यही कार्य करने का प्रयत्न करूंगा।'

कार्यक्रम के उपरान्त मौसम का रूप और भी बदल गया। हवा ने वेग धारण करते हुए तूफान का रूप धारण कर लिया। हल्की बूंदाबांदी भी हुई। तेज हवा में अच्छी ठंडक थी, इस के कारण वातावरण में शीतलता व्याप्त हो गई, जो प्रायः अहोरात्र तक रही। यही वजह थी कि आज कई दिनों बाद शरीर पसीने से प्रायः मुक्त रहा।

पूज्यप्रवर का प्रवास जिस इंस्टिट्यूट में हो रहा था, उसके ऑनर परिवार से जुड़े हुए कई सदस्य आज पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन पथदर्शन से लाभान्वित हुए। मध्याह्न में एक मुस्लिम महिला पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में उपस्थित हुई। उसने पूज्यप्रवर से निवेदन किया--'मैं प्रतिदिन सात बार नमाज पढ़ती हूं और कुरान की व्याख्या कर लोगों को समझाती भी हूं। आप अहिंसा यात्रा के दौरान नशामुक्ति का प्रचार-प्रसार कर बहुत ही नेक कार्य कर रहे हैं। मेरे दो बेटे हैं। मैं उन्हें नशामुक्त रहने के लिए बहुत समझा चुकी, लेकिन वे मानते ही नहीं हैं, मैं क्या करूं?'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने उसे समझाया--'जब भी आप नमाज पढ़ो, साथ में यह भावना भी कर लिया करो कि वे (दोनों पुत्र) नशामुक्त बनें, सत्पथ पर चलें।' उस मुस्लिम महिला ने आचार्यप्रवर की तालीम को ससम्मान स्वीकार किया।

मन रूपी नौकर मालिक पर हावी न हो

३ जून। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर प्रातः चौडावरम् से तुम्मालापलेम की ओर प्रस्थित हुए। गत कल से मौसम में सुहावनी शीतलता व्याप्त थी। आज सुबह भी उसका प्रभाव अनुभूत हो रहा था, किन्तु सूर्य ज्यों-ज्यों उर्ध्वगमन करता जा रहा था, त्यों-त्यों बादल भी छिन्न-भिन्न होते जा रहे थे और आतप भी बढ़ता जा रहा था। इसके बावजूद भी सूर्य किरणें कुछ दिनों पूर्व की तरह प्रखरता धारण नहीं कर पाईं। पूज्यप्रवर के पांव दर्द में न्यूनता अवश्य आई, किन्तु आज भी हल्का दर्द था, फिर भी आचार्यप्रवर ने पूरा विहार पैदल ही किया। आचार्यप्रवर ने पांव दर्द के संदर्भ में न तो कोई औषधि ग्रहण की, न ही मलहम आदि लगाया। किसी भी उपचार के बिना आचार्यप्रवर अपने संकल्पबल के आधार पर प्रलंब विहार करते हुए भी अपने पांव दर्द को ठीक कर रहे हैं। लगभग १०.० कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर तुम्मलापलेम में स्थित श्री मित्तापाल्ली कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारे जीवन में मन का भी बड़ा महत्त्व है। शरीर और वाणी की उपयोगिता है, किन्तु मन भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। मनरूपी घोड़े को शिक्षण के द्वारा नियंत्रण में रखा जा सकता है। उसकी लगाम हाथ में रहा तो उसे उत्पथगामी होने से बचाया जा सकता है। ज्ञानरूपी लगाम से मनरूपी दुष्ट अश्व पर नियंत्रण करना चाहिए। धर्म की शिक्षण के द्वारा मनरूपी दुष्ट अश्व को सुअश्व बनाया जा सकता है।

मन एक ऐसा तत्त्व है जो दुर्मन भी बन सकता है और सुमन भी बन सकता है। मन ही बंधन का कारण है और मन ही मुक्ति का कारण है। दुर्विचारयुक्त मन बंधन और सुविचारयुक्त मन मुक्ति की ओर ले जाने वाला होता है। मन में प्रमाद, आवेश, आसक्ति आदि हैं तो आदमी का दुःख बढ़ सकता है और मन में अप्रमाद, अनावेश, अनासक्ति आदि हैं तो दुःख नष्ट हो सकते हैं। आदमी मन को सुमन बनाने का प्रयास करे, यह काम्य है। वह यह प्रयास करे कि मन में बुरे विचार न आएं।

जब भी समय मिले, आदमी को पवित्र मंत्र का जप करने का प्रयास करना चाहिए। पवित्र मंत्र में मन नियोजित हो जाता है तो वह पवित्र बन सकता है। आदमी कभी खाली बैठा हो तो मन को श्वास के साथ जप में नियोजित कर लेना चाहिए। उदाहरणतया नमस्कार महामंत्र का एक पद है--'णमो सिद्धाणं' इस एक पद में भी मन को केन्द्रित कर लिया जाए तो भी एक अच्छा प्रयोग हो सकता है। अर्थबोध के साथ इस मंत्र का जप कर लिया जाए तो मन में कितनी शुभता आ सकती है। श्वास लेते समय मन ही मन 'णमो' का उच्चारण और श्वास छोड़ते समय 'सिद्धाणं' का उच्चारण किया जा सकता है। श्वास को दीर्घ श्वास का रूप किया जा सकता है। इस प्रकार पवित्र मंत्र के जप में मन लग जाता है तो वह कितना शुभ अध्यवसाय वाला बन सकता है और फिर यह मन आदमी को मुक्ति की ओर ले जाने वाला बन सकता है।

आदमी कई बार बुरे विचारों के कारण अपने ही मन से परेशान हो जाता है। मानों नौकर मालिक पर हावी हो जाता है। होना तो यह चाहिए कि नौकर मालिक के निर्देशानुसार कार्य करे, किन्तु वह मन रूपी नौकर कभी-कभी इतना हावी हो जाता है कि इंसान रूपी मालिक को उसके अनुसार चलना पड़ता है। आदमी मन को अपने ऊपर हावी न होने दे, उसे अपने वश में रखे।

दुनिया में कितने-कितने प्राणी हैं, जो अमनस्क हैं, उन्हें मन प्राप्त नहीं है। जिनके मन नहीं होता, वे किसी दृष्टि से अविकसित प्राणी होते हैं। जिसके पास मन होता है, वे विकसित प्राणी होते हैं, किन्तु उनमें पवित्र भावनाओं का विकास न हो तो उनका काफी नुक्सान हो सकता है। प्राणी में मन का नहीं होना, बहुत नीचे स्तर की स्थिति होती है। मन का होना प्राणी के विकास का सूचक है, किन्तु और विकास तब हो सकता है, जब मन पर नियंत्रण हो। अन्यथा यह विनाश कर सकता है। मन वाला प्राणी ही ज्यादा खराब गति में जा सकता है। बिना मन वाले प्राणी ज्यादा खराब गति में नहीं जाते। वे नरक में जाएंगे तो भी प्रारंभिक नरक में ही रह जाएंगे। मन वाले प्राणी तो आगे के नरक में भी जा सकते हैं। मन वाला प्राणी महान धर्म कर सकता है तो वह पाप भी भयंकर कर सकता है। मन तो मानों एक शक्ति है। यह पाप में नियोजित होती है या धर्म में, यह विशेष ध्यान देने योग्य बात होती है। आदमी खराब कार्य करे तो वह मरकर सातवें नरक तक जा सकता है और वह साधना करके मोक्ष तक जा सकता है। मन पतन और विकास का साधन बन सकता है। आदमी यह प्रयास करे कि उसका मन पतन नहीं, उर्ध्वगमन का साधन बने, यह काम्य है।

सायंकाल करीब पांच बजे आचार्यप्रवर ने तुम्मलापलेम से इडलापाडु के लिए प्रस्थान किया। प्रखरता लिए हुए सूर्य प्रायः सम्मुखीन बना हुआ था। इस कारण वातावरण में अच्छा आतप व्याप्त था, किन्तु पूज्यप्रवर उसकी परवाह किए बिना अपने गंतव्य की ओर गतिमान थे। क्रमशः सूर्य ढला तो वातावरण भी कुछ शीतल बन गया। लगभग ५.५ कि.मी. का विहार कर परम पूज्य आचार्यप्रवर इडलापाडु में पधारे। सेंट एन्नीस हाइस्कूल में आज का रात्रिकालीन प्रवास हुआ।

सामायिक में प्रवचन श्रवण से होता है दोहरा लाभ

४ जून। परम पावन आचार्यप्रवर ने प्रातः इडलापाडु से गणपवरम् की ओर प्रस्थान किया। मंद-मंद बहती हवा के कारण सूर्य का आतप कुछ कम महसूस हो रहा था। आज मार्ग में कहीं सर्विस रोड थी तो कहीं मात्र हाइवे। जहां सर्विस रोड थी वहां हाइवे 'सिक्स लेन' बना हुआ था, अन्यथा वह 'फोर लेन' के रूप में था। 'सिक्स लेन' में वाहनों से अनायास होने वाला बचाव 'फोर लेन' में सायास करना पड़ रहा था। मार्ग के परिपार्श्व में दोनों ओर स्थित कई खेतों में 'टेकवुड' नामक वृक्ष हजारों की संख्या में सलक्ष्य उगाए हुए दिखाई दे रहे थे। बताया गया कि इन वृक्षों से फल प्राप्त नहीं होते। इनकी लकड़ी कागज बनाने में प्रयुक्त होती है। इसी दृष्टि से इन्हें विकसित किया जा रहा है। मार्गवर्ती तिस्मापुरम् के ग्रामीण पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। आचार्यप्रवर करीब ६.३ कि.मी. का विहार कर गणपवरम् में स्थित श्री

चुण्डी रंगनायकलु इंजिनियरिंग कॉलेज में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'प्रवचन के माध्यम से जनता को शुभ योग में रहने का अवसर प्राप्त हो सकता है। प्रवचन में सामायिक भी की जा सकती है। सामायिक अपने आप में शुभ योग नहीं है वह संवर है, किन्तु सामायिक में कोई स्वाध्याय करता है, जप करता है, तत्त्व चर्चा करता है तो यह शुभ योग हो जाता है। जैसे किसी के पास एक लाख रुपए की संपत्ति है, वह एक लाख का मालिक है। वह उससे कोई व्यवसाय शुरु करे और बारह माह में उसने एक लाख के दो लाख कर लिए तो ज्यादा लाभ हो जाता है। इसी प्रकार सामायिक में संवर का लाभ तो हो ही जाता है, उसके साथ स्वाध्याय आदि भी किया जाता है तो उसे निर्जरा के रूप में दोहरा लाभ प्राप्त हो सकता है। मन प्रवचन सुनने में तल्लीन रहे तो सामायिक के साथ में शुभ योग की भी आय हो सकती है।

दूसरा उदाहरण--किसी आदमी के पास एक लाख रुपए हैं और वह उन्हें बैंक में जमा करा देता है तो एक लाख रुपए तो उसके रहेंगे ही, उसे ब्याज का फायदा भी मिल सकेगा। इसी प्रकार सामायिक के साथ किए जाने वाला स्वाध्याय आदि मानों मूल पूंजी का ब्याज होता है। इसलिए सामायिक के साथ प्रवचन श्रवण ज्यादा लाभप्रद हो सकता है अथवा यों भी कहा जा सकता है कि प्रवचन श्रवण के साथ सामायिक करना ज्यादा लाभप्रद हो सकता है।

समय की व्यवस्था अच्छी बिठा ली जाए तो कुछ समय निकाला भी जा सकता है। समय तो मोतियों के समान है। यह तो आदमी पर निर्भर करता है कि वह मोतियों को किस रूप में संयोजित करता है। वह चाहे तो मोतियों से माला भी बना सकता है। आदमी समय का अच्छा प्रबन्धन कर लेता है तो धार्मिक साधना के लिए समय निकल सकता है, अन्यथा समय तो ऐसे ही बीतता जाता है। ऑफिस जाना, सब्जी लाना, किसी समारोह आदि में जाना आदि-आदि काम-धंधे गृहस्थों के चलते रहते हैं, लेकिन धर्म को बिल्कुल गौण नहीं करना चाहिए।

आगे धंधो पाछे धंधो, धंधा मांही धंधो।
धंधा मां स्यूं समय निकालै, वो साहिब को बंदो।।

कितने लोग अभी गुरुकुलवास में मार्ग सेवा में हैं। इसका अर्थ है वे लोग समय निकालकर उसका सदुपयोग कर रहे हैं। आदमी व्यवस्था अच्छी बिठाए तो समय निकल भी सकता है।

समय की तीन अवस्थाएं होती हैं--अनुपयोग, दुरुपयोग और सदुपयोग। समय का कोई उपयोग नहीं करना अनुपयोग होता है। गलत कार्यों में समय को व्यतीत करना समय का दुरुपयोग होता है। अच्छे कार्यों में समय का नियोजन करना समय का सदुपयोग होता है। गार्हस्थ्य की दृष्टि से व्यवसाय आदि में समय को लगाना भी समय का सदुपयोग हो सकता है। आदमी का समय का दुरुपयोग तो करे ही नहीं, अनुपयोग भी क्यों करे। धार्मिक दृष्टि से उसके सदुपयोग का प्रयत्न करे, यह काम्य है।

कोई दूसरों की निंदा करे, उसमें रस नहीं लेना चाहिए। बुरी चीजों को देखने में आंखों का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। किसी को कटु वचन बोलने में, निंदा करने में वाणी का प्रयोग नहीं करना चाहिए और गलत कार्यों में अपने शरीर को प्रवृत्त नहीं करना चाहिए। इस प्रकार देखने, बोलने और अन्य शारीरिक चेष्टाओं में अशुभता से बचा जा सकता है।

आदमी कितना भी व्यस्त हो, कभी दुर्भाग्यवश कोई चोट आदि लग जाए और चिकित्सक कह दे कि एक माह विश्राम करना होगा तो फिर आदमी को समय निकालना ही पड़ता है। आदमी परवशता में समय निकाले, वह एक बात है और स्वस्थता या स्ववशता की स्थिति में धार्मिक साधना के लिए समय कुछ समय निकालना अच्छी बात होती है। आदमी को समय का अंकन करना चाहिए और निःशुल्क मिलने वाले समय का सदुपयोग करना चाहिए।'

सीआर कॉलेज के प्रिन्सिपल डॉ. मनम श्रीनिवास राव ने 'जय-जय ज्योतिचरण, जय-जय महाश्रमण के उद्घोष से अपनी बात आरम्भ करते हुए कहा--'मैं पूरे सीआर कॉलेज की ओर से आचार्यश्री महाश्रमणजी का हार्दिक स्वागत-अभिनन्दन करता हूं। जो दिल को शांति और ज्योति देने वाला होता है वह ज्योतिचरण होता है। आज हमारा कॉलेज परिसर ज्योतिचरण का स्पर्श पाकर धन्य हो गया है। गुरुजी के आज के प्रवचन के तीन शब्द अनुपयोग, दुरुपयोग और सदुपयोग को समझ कर हम अपने समय को व्यवस्थित कर लें तो हम सभी का जीवन बदल जाए। लोग शिक्षित तो हो रहे हैं, किन्तु नैतिकता गिरती जा रही है। नैतिकता को स्थापित करने के लिए आप जैसे महान संत की आवश्यकता है। आप जो अहिंसा यात्रा लेकर चले हैं और इसके माध्यम से लोगों को सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति का संदेश दे रहे हैं। उसे सभी लोग मान लें तो यह भारत बहुत अच्छा बन सकता है और भावी पीढ़ी भी अच्छी हो सकती है।'

पूज्यप्रवर ने संस्थान से संबंधित लोगों को अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति प्रदान कर संकल्पत्रयी ग्रहण करवाई।

सायंकाल करीब ५.१५ बजे परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर गणपवरम् से चिलकलुरीपेट की ओर प्रस्थित हुए। दायीं ओर से तिरछे रूप में सम्मुखीन बना हुआ सूर्य आतप बरसाता हुआ अहिंसा यात्रा की दक्षिण दिशा में गति को स्पष्ट दर्शा रहा था। विजयवाड़ा के कार्यकर्ता काफी दिनों से भीषण गर्मी में विहार के दौरान चारित्रात्माओं की सेवा में चलने वाले श्रद्धालुओं के लिए पेय आदि की व्यवस्था कर रहे हैं। क्रमशः ढलते हुए सूरज के साथ मौसम भी अनुकूल बनता गया।

लगभग ४.० कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर चिलकलुरीपेट में पधारे। सांई श्रीनिवास डी.ई.डी. कॉलेज में आज का रात्रिकालीन प्रवास हुआ। आचार्यप्रवर के पदार्पण से चिलकलुरीपेट में रहने वाला पचपदरा का एक तेरापंथी परिवार आह्लाद का अनुभव कर रहा था। बताया गया कि बोरावड़ का एक तेरापंथी परिवार भी यहां प्रवास करता है। उसे किसी अत्यावश्यक कार्य से कहीं जाना पड़ा, इस कारण वह अपने प्रवास क्षेत्र में पूज्यप्रवर के दर्शन नहीं कर पाया।

आसक्ति से बचें

५ जून। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः चिलकलुरीपेट से मॉटूर की ओर प्रस्थान किया। सूर्य प्रखरता के साथ आतप बरसा रहा था और मंद-मंद हवा उसके प्रभाव को कुछ कम करने की कोशिश कर रही थी। इन दिनों साध्वियां प्रायः प्रतिदिन पेय आदि लेकर पूज्यप्रवर की अगवानी में करीब एक-दो किलोमीटर दूर तक पहुंच जाती हैं। अपने द्वारा लाए हुए पेय को पूज्यप्रवर द्वारा ग्रहण करना उनके लिए धन्यता की अनुभूति का कारण बन जाता है। पूज्यप्रवर लगभग १२.० कि.मी. का विहार कर मॉटूर में पधारे। विवेकानंद नेक्स्ट जेनरेशन इंग्लिश स्कूल में आज सायं तक प्रवास हुआ। अपने प्रवास क्षेत्र में आचार्यप्रवर के पदार्पण से छोटी खाटू निवासी मॉटुर प्रवासी एकमात्र तेरापंथी परिवार हर्षविभोर बना हुआ था।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आदमी को ज्यादा आसक्ति में नहीं जाना चाहिए। परिग्रह तो मानों एक भार है। उसे छोड़ना अपने आप में उपहार हो सकता है। श्रावक के तीन मनोरथ होते हैं। उनमें एक है कि कब मैं अल्पमूल्य और बहुमूल्य परिग्रह का प्रत्याख्यान करूंगा। श्रावक को यह सोचना चाहिए कि मेरे पास परिग्रह है और साधु अपरिग्रही हैं। वह दिन धन्य होगा जब मैं साधु को वस्त्र, पात्र, भोजन, स्थान आदि का दान देकर धन्य बनूंगा। श्रावक का दूसरा मनोरथ होता है कब मैं मुण्ड हो गृहस्थपन छोड़कर साधुव्रत स्वीकार करूंगा और तीसरा मनोरथ कब मैं अपश्चिम मरणान्तिक संलेखना स्वीकार करूंगा। इन तीन मनोरथों के अनुरूप आचरण कर गृहस्थ भी अच्छी धार्मिक साधना कर सकता है।'

विवेकानंद नेक्स्ट जनरेशन इंग्लिश स्कूल में आचार्यप्रवर का प्रवास हो रहा था। सायंकाल विद्यालय के चेयरमेन डॉ. श्रीकृष्णामूर्ति, प्रिंसिपल आदि लोग पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में उपस्थित हुए। आचार्यप्रवर ने उन्हें पावन पथदर्शन प्रदान किया।

स्थान की अनुकूलता के लिए परमाराध्य आचार्यप्रवर ने सायं करीब ६.३० बजे विवेकानंद नेक्स्ट जनरेशन इंग्लिश स्कूल से प्रस्थान किया और मॉटुर में ही करीब तीन सौ मीटर दूर स्थित जिला परिषद हाइस्कूल में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ। मार्ग में मॉटुरवासियों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगलपाठ का श्रवण किया।

सायंकाल मौसम ने करवट ली। तेज हवा के साथ आसमान में बादल उमड़ आए। मेघ गर्जना हुई, बिजलियां कौंधने लगी। कुछ ही समय पश्चात् हल्की बारिश हुई, किन्तु कुछ ही क्षणों में वह थम गई। बिजलियों के कौंधने का क्रम देर रात तक जारी रहा, किन्तु बाद में वर्षा नहीं हुई।

तीव्र उमस के बीच मृग मरीचिका ज्यों लुभाते रहे बादल

६ जून। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः मॉटूर से कोनान्की की ओर प्रस्थान किया। गत रात्रि से मेघाच्छन्न बना हुआ आसमान आज प्रातः भी उसी स्थिति में था। इस कारण सूर्य प्रायः पूरे विहार के दौरान अदृश्य ही बना रहा, किन्तु हवा का अभाव से वातावरण में तीव्र उमस व्याप्त थी। इस कारण अत्यधिक पसीना शरीर से बह रहा था। संतों के चेहरों और वस्त्रों को देखकर ऐसा लग रहा था, मानों वे वर्षा में भीगकर आए हों।

मॉटूर में प्रवासित छोटी खाटू के सेठिया परिवार ने अपने घर के आसपास पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए मंगलपाठ सुनाया।

मार्ग में यत्र-तत्र 'ग्रेनाइट' के विशालकाय पत्थरों को व्यवस्थित रूप में काटकर उपयोगी बनाया जा रहा था। बताया गया कि आसपास के पहाड़ों में 'ग्रेनाइट' बहुलतया प्राप्त होता है। यहां 'स्टील ग्रे' और 'ब्लैक' कलर के ग्रेनाइट पत्थर मुख्य रूप से उपलब्ध होते हैं। यह क्षेत्र ग्रेनाइट की बड़ी मण्डी के रूप में स्थापित है। यहां के ग्रेनाइट विदेशों में भी निर्यात किए जाते हैं। इस क्षेत्र में 'ग्रेनाइट' के करीब ५०० यार्ड बने हुए हैं। जगह-जगह उन पत्थरों को काटने की मशीने लगी हुई हैं। यहां से कुछ आगे चेन्नई की ओर जाने वाले मार्ग में ही ओंगोल क्षेत्र में 'गोल्डन गेलेक्सी' नामक ग्रेनाइट निकलता है, जो अधिकांश रूप में विदेशों में ही निर्यात होता है। मॉटूर में सूती धागों की मिल भी बड़ी संख्या में हैं। यहां निर्मित धागे भी विदेशों में निर्यात किए जाते हैं।

आज के विहार पथ के आसपास नींबू, अनार, आंवला की खेती भी दिखाई दे रही थी। पूज्यप्रवर करीब ७.८ कि.मी. का विहार कर कोनान्की में स्थित जिला परिषद हाइस्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आदमी के पास वाणी की शक्ति है। संसार के अनंत प्राणियों के पास वाणी की शक्ति नहीं है। जिसके पास वाणी की शक्ति है, उसे मौन का अभ्यास भी करना चाहिए। अनावश्यक, कटु और मृषा वचनों से बचना चाहिए।

आदमी को मितभाषी और मिष्टभाषी बनने का प्रयास करना चाहिए। कोई बात शांति और मिठास के साथ बताई जा सकती है और उसी बात को आवेश, कठोरता और कटुता के साथ भी बताया जा सकता है। पहला व्यक्ति गुस्सा करेगा तो दूसरा व्यक्ति भी गुस्सा कर सकता है। स्वयं मधुरता के साथ बात करेंगे तो संभव है सामने वाला भी मधुरता के साथ बात करे।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2018-20 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2018-2020
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

आदमी को ऋतभाषी भी रहना चाहिए। जो बात जैसी है, उसे उसी रूप में बताने का प्रयत्न करना चाहिए। झूठ से आदमी का विश्वास खत्म हो सकता है। सच बोलना मुश्किल हो तो मौन रह जाना चाहिए। सच्चाई का मार्ग सीधा-सपाट राजपथ जैसा होता है। झूठ का मार्ग टेढ़ा-मेढ़ा और परम की मंजिल से दूर ले जाने वाला होता है। सत्य परेशान तो हो सकता है, किन्तु परास्त नहीं होता। झूठ से तात्कालिक लाभ प्रतीत हो सकता है, किन्तु उससे दीर्घकालिक नुक्सान हो सकता है। बनावटी बातों में प्राण नहीं होता, वे निष्प्राण होती हैं। यथार्थ से युक्त बातें सप्राण होती हैं। मितभाषिता, मिष्टभाषिता और ऋतभाषिता से आत्मा शुद्ध बन सकती है। शुद्ध आत्मा बुद्ध बन जाती है।

कार्यक्रम सम्पन्नता के निर्धारित समय में कुछ कालमान अवशिष्ट था। पूज्यप्रवर ने इन क्षणों में 'जय महावीर भगवान' गीत का संगान किया। तत्पश्चात् 'मंगल भावना' का प्रयोग करवाया और 'चैत्य पुरुष जग जाए' का आंशिक संगान किया।

आज स्थानीय ग्रामीण बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ पहुंच रहे थे। आचार्यप्रवर यथावसर आगंतुकों पर आशीषवृष्टि कर रहे थे। भाषायी भेद के कारण ग्राम्यजनों के साथ सीधा संवाद कुछ कठिन हो रहा था, किन्तु आंध्रप्रदेशवासी श्रद्धालुओं से आचार्यप्रवर व अहिंसा यात्रा के विषय में सुनकर और अहिंसा यात्रा की तेलगू प्रकाशित सामग्री को पढ़कर वे और अधिक श्रद्धाप्रणत बन रहे थे। उत्सुकता के साथ आने वाले ग्रामीण दिल में श्रद्धा लिए हुए लौट रहे थे।

प्राचूर के विधायक श्री वाई. शांबशिवा राव, कोनान्की के सरपंच श्री सुरेश आदि ने आज पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया।

आज प्रायः दिनभर आकाश मेघाच्छन्न बना रहा। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान हल्की बूंदाबांदी प्रारम्भ हो गई, जो कई घंटों तक जारी रही। इस प्रकार होने वाली वर्षा का वेग नगण्य-सा ही बना रहा। बार-बार यही अनुमानित हो रहा था कि अब तेज वर्षा होगी, किन्तु बादलों का यह रूप पूर्व रात्रि तक 'मृग मरीचिका' जैसा ही सिद्ध हुआ। प्रायः पूरे दिन वातावरण में तीव्र उमस व्याप्त रही। मानों बादलों के भिगोने की वृत्ति को उमस ने शरीर के पसीने से नहलाने के रूप में अपना लिया। देर रात मानसून की पहली बारिश हुई। तेज हवा के साथ होने वाली कुछ तीव्र वर्षा के कारण आचार्यप्रवर सहित संतों की निद्रा में व्यवधान हुआ। प्रवास स्थल के बरामदे पानी से भरने लगे तो आचार्यप्रवर और मुनिवृंद कक्षों के भीतर पधार गए।

स्मारणा

- मोबाइल फोन से न बात करें, न सुनें, न व्यक्तिगत बात के लिए स्पीकर से सुनें, न बोले, न उसमें दृश्य देखें, न मंगलपाठ आदि सुनाएं। न उसे हाथ में लें। मर्यादा का अतिक्रमण होने पर कठोर प्रायश्चित्त दिया जा सकेगा। **(अनुशासन संहिता, चारित्रात्मा समुदाय १३/३/४०)**

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001
मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला